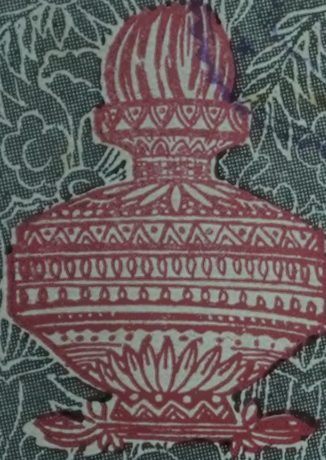


समाज विकासमाला

मीरा के पद

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ५५

मीरा के पद

परिचय तथा चुने हुए भजन

लेखक
बलवंतसिंह महता

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५६

सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५६
मूल्य
छः आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स
नई दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल का हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों। यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इन सबकी भाषा बड़ी आसान रखी गई है और जहांतक हो सका है, मिले-जुले कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं होने दिया है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। विषय ऐसे लिये गए हैं, जिनमें पाठकों की खास रुचि हो। छपाई-सफाई के बारे में विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

हम चाहते हैं कि इन किताबों को पढ़कर इनके बारे में पाठक हमें अपनी राय लिखें। यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम होती हो तो उसकी भी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें। हम उनपर विचार करेंगे और उन सुझावों की बुनियाद पर किताबों को और ज्यादा अच्छी और उपयोगी बनाने का प्रयत्न करेंगे।

—मंत्री

पाठकों से

सूर, तुलसी, कबीर, मीरा आदि भक्तों के पदों से पाठक भली-भाँति परिचित हैं। सूर कृष्ण के भक्त थे, तुलसीदास राम के। कबीर ने निर्गुण की उपासना की। मीरा की भक्ति कृष्ण के प्रति थी। अपने गिरधर गोपाल के चरणों में लौ लगाकर मीरा ने भक्ति का ऐसा झरना बहाया कि उसमें गोता लगाकर आज भी बहुत-से लोग शान्ति और शीतलता अनुभव करते हैं।

वैसे सभी संतों की अपनी महिमा है और उनकी वाणी का महत्व है, लेकिन मीरा का उनमें विशेष स्थान है। उनके पदों में विरह की तड़पन और व्यथा है। भावनाएं इतनी कोमल हैं कि पाठक के हृदय पर सीधा असर करती हैं।

इस पुस्तक में हमने मीरा का संक्षिप्त परिचय दिया है और कुछ चुने हुए पद। आशा है, पाठक इन्हें ध्यान से पढ़ेंगे और भक्ति-रस का आनन्द लेंगे। बहुत-से पद तो जबानी याद करने योग्य हैं।

—सम्पादक



मीराबाई

मीरा के पद

: १ :

मीरा कौन थीं ?

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा आदमी हो जिसने मीरा का नाम न सुना हो। उनके पद जगह-जगह गाये जाते हैं और उन्हें सुनकर लोग भक्ति के रस में डूब जाते हैं।

राजस्थान वीरों की भूमि है। मीरा ने अपनी भक्ति की गंगा इसी भूमि में बहाई। भक्ति में वीरता की जरूरत होती है। कायर भक्ति नहीं कर सकता। कबीर ने कहा है कि भक्ति उसीसे हो सकती है, जो अपना सिर हथेली पर लिये फिरता है। वीर को तो अपने तन का ही मोह छोड़ना पड़ता है, परन्तु भक्त को तन, मन, धन सबकुछ भगवान को अर्पित कर देने होते हैं। मीराबाई का जीवन भी ऐसा ही था। उनका त्याग ऊंचे दर्जे का था और उनकी भक्ति का तो कहना ही क्या था ! दुनिया की भारी-से-भारी मुसीबत भी उनको भक्ति के रास्ते से न हटा सकी,

बल्कि जैसे-जैसे बाधाएं बढ़ती गईं, उनकी भक्ति की धारा और तेज होती गई।

उन्होंने अपने जीवन में दिखला दिया कि जहर को भी अमृत में बदला जा सकता है; लेकिन ऐसा तभी हो सकता है, जबकि हमारे हृदय में प्रेम छल-छलाता हो। मीरा का हृदय प्रेम से सराबोर था। उनकी भक्ति आनन्द देनेवाली थी। भगवान कृष्ण के चरणों में उनकी लौ लगी थी। उन्हींके प्रेम में वह पागल-सी रहती थीं। उन्हींकी खोज में भटका करती थीं। उनके दर्शन के लिए हर घड़ी बेचैन रहती थीं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि भक्ति का मार्ग बड़ा कठिन होता है। उसपर चलनेवाला अपनेको भूल जाता है, दुनिया को भूल जाता है। दुनिया उसे बेस्वाद लगती है। उसे रस आता है प्रभु के स्मरण में, उनके चरणों की भक्ति में, उनके दर्शन में। मीरा भक्ति की राह चलीं और अपने महान त्याग से अपना नाम अमर कर गईं। आज भारत का कोई भी कोना ऐसा नहीं है, जहां मीरा का नाम और उनके पद न पहुंचे हों। उनके भजन घरों में, समाजों में, मंदिरों में, धार्मिक उत्सवों में बड़े प्रेम और आदर के साथ

गाये जाते हैं ।

मीरा मेवाड़ की थीं । इसलिए कुछ लोग मेवाड़ को 'मीरा का देश' कहते हैं । उनका जन्म सं० १५५५ वि० के आस-पास राठौड़ कुल में मेड़ते परगने के कुड़की नामक गांव में हुआ था । यह गांव उनके पिता रत्नसिंह की जागीर में था । रत्नसिंह मेड़ते के राव दूदाजी के छोटे लड़के और जोधपुर राज्य को स्थापित करनेवाले राव जोधाजी के पोते थे । मीरा की माता भगवान् की भक्त थीं । वह रोज घंटों पूजा-पाठ करतीं और साधु-संतों की सेवा में अपना समय बितातीं । इसका मीरा पर बड़ा असर पड़ा ।

कृष्ण भगवान् मीरा के सर्वस्व थे । कहते हैं कि उनकी एक मूर्ति मीरा ने बचपन में बहुत हठ करके एक साधु से लेली थी । तभी से वह उसकी बराबर पूजा करती रहीं । बचपन में मीरा ने एक बार अपनी सहेली का ब्याह होते देखकर अपनी माता से पूछा कि मेरा वर कौन है ? माता ने हँसकर विनोद में जवाब दिया—कृष्ण । तभी से वह उन्हें अपना पति मानने लगीं ।

मेवाड़ के प्रसिद्ध वीर जयमल राठौड़ मीरा के चचेरे भाई थे । दोनों की उम्र बराबर होने के कारण

वे बचपन के साथी भी थे। मीरा छोटी थीं, उसी समय उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। इसलिए उनका लालन-पालन जयमल के साथ उनके दादा राव दूदाजी की देख-रेख में होने लगा। दूदाजी वैष्णव थे। इसलिए दोनों पर उनकी संगति का असर पड़ा। दोनों ही बड़े भक्त-वीर हुए और दोनों का नाम खूब चमका।

मेड़ते का राज्य छिन जाने पर जयमल मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह के पास चले आये। चित्तौड़गढ़ के तीसरे शाके में ये किले के रक्षक नियुक्त किये गए। महाराणा की गैरहाजिरी में जो वीरता उन्होंने दिखाई, वह राजस्थान के इतिहास में बेजोड़ है। लड़ाई से पहले टांग में गोली लग जाने से जयमल लड़ने के योग्य न रहे; इसलिए वह अपने साथी वीर कल्ला राठौड़ के कन्धों पर बैठकर लड़े और ऐसे लड़े कि दुश्मन के दांत खट्टे कर दिये। अकबर उनकी वीरता पर मुग्ध हो गया और उसने उनकी मूर्ति बनाकर अपने किले में रखवाई। जयमल भक्त भी थे। उनका नाम 'भक्तमाल' में आया है। भक्त-वीर जयमल के वंशज आज भी मौजूद हैं।

वि० संवत् १५७३ के आस-पास मीरा का

विवाह महाराणा सांगा के बड़े लड़के भोजराज के साथ हुआ। दोनों बड़े प्रेम से चित्तौड़गढ़ के महलों में रहने लगे। लेकिन दुर्भाग्य से कुछ ही समय बाद भोजराज का देहान्त हो गया। माता पहले ही चल बसी थीं। पिता रत्नसिंह राणा सांगा की ओर से बाबर के साथ युद्ध करते हुए मारे गए। इस प्रकार घर के प्रेम की धारा धीरे-धीरे बिल्कुल सूख गई। मीरा का सारा प्रेम अब अपने गिरधर गोपाल के चरणों पर निछावर हो गया। दिन-रात वह उनकी भक्ति में लीन रहने लगीं। उनकी भक्ति की चर्चा चारों ओर फैल गई। दूर-दूर से साधु-महात्मा और भक्त लोग उनके उपदेश सुनने और दर्शन करने के के लिए आने लगे। चित्तौड़गढ़ तीर्थ-स्थान बन गया।

महाराणा सांगा और उसके बाद महाराणा रत्नसिंह के समय में तो सब शांति से चलता रहा, पर महाराणा विक्रमादित्य मीरा के इन कामों से खिन्न रहने लगे। वह नहीं चाहते थे कि वह लोगों के बीच भगवद्-भजन करें। साधु-महात्माओं का चित्तौड़ आना-जाना भी उन्हें पसन्द न था। इसलिए मीरा के रास्ते में रुकावटें आने लगीं। लेकिन कसौटी पर कसकर ही आदमी कंचन बनता है। मीराबाई उससे कैसे बच

सकती थीं ? उन्हें भी अग्नि-परीक्षा में से गुजरना पड़ा। उनकी भक्ति सच्ची और गहरी थी। इससे वह परीक्षा में खरी उतरीं और आंच में तपकर वह कुन्दन बन गईं।

मीरा मेवाड़ छोड़कर कुछ समय के लिए अपने पीहर अपने भाई जयमल के पास चली गईं। कुछ समय वहां रहकर वृन्दावन गईं और तीर्थ-यात्रा करती हुई द्वारिका जा पहुंचीं।

मीरा के मेवाड़ छोड़ते ही राज्य में चारों ओर अशान्ति फैल गई। गुजरात के बादशाह बहादुरशाह ने मेवाड़ पर हमला कर दिया। यह लड़ाई चित्तौड़ के द्वितीय शाके के नाम से मशहूर है, जिसमें अनगिनत लोग काम आये और हजारों स्त्रियों ने आग में कूदकर अपने प्राण दे दिये।

विक्रमादित्य को जब मीरा की भक्ति की सचाई और गहराई का पता चला तो अपने आदमियों को द्वारिका भेजकर उन्होंने मीराबाई को फिर से मेवाड़ बुलाना चाहा, लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया। कहते हैं कि जब लोगों ने चलने का बहुत आग्रह किया तो वह रणछोड़रायजी से मन्दिर में आज्ञा लेने गईं और वहीं मूर्ति में समा गईं। जब लोगों

ने भीतर जाकर देखा तो मूर्ति पर मीरा की साड़ी के सिवा कुछ नहीं मिला। यह घटना सच हो या न हो, लेकिन इसमें शक नहीं कि मीराबाई की भक्ति अपने ढंग की निराली थी।

मीराबाई के विषय में कई चमत्कारी बातें कही जाती हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि उनके गुरु महात्मा रैदास थे। वृन्दावन के चैतन्य सम्प्रदाय के कुछ लोग गोस्वामी तुलसीदासजी को उनका गुरु मानते हैं। कहा जाता है कि तुलसीदासजी से मीराबाई ने अपने बारे में कुछ सवाल पूछे थे। उनका उत्तर गोस्वामीजी ने नीचे लिखे पद में दिया था:

जाके प्रिय न राम वैदेही।

तजिये ताहि कोटि वैरी सम, जदपि परम सनेही॥
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषण बन्धु, भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो, कन्त ब्रजबनितन भये सब मंगलकारी॥
नातो नेह राम सो मनियत, सुहृद सुसेव्य जहां लौं।
अंजन कहां आंख जो फूटै, बहुतक कहों कहां लौं॥
तुलसी सो सब भांति परमहित, पूज्य प्रान ते प्यारो।
जासो होय सनेह रामपद, एतो मतो हमारो॥

मीरा की कई पुस्तकें मिलती हैं, जिनमें 'नरसी का मायरा' राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध है। कहते हैं कि

मल्लार राग को उन्होंने जन्म दिया था। उनके पद अनेक राग-रागनियों में गाये जाते हैं। उन पदों में गिरधर गोपाल की भक्ति की गंगा बहती है। उनमें विरह और तड़पन भी है। उन्हें जो भी पढ़ता या सुनता है, उसका हृदय गद्‌गद हो उठता है। पदों की भाषा बड़ी ही सरल है, साथ ही उनके भाव बड़े ऊंचे हैं। आगे हम कुछ चुने हुए पद दे रहे हैं।

: २ :

मीराबाई के पद

१

बसो मोरे नैनन में नंदलाल।
मोहनी मूरति सांवरी सूरति नैणा बने बिसाल।।
मोर मुकट मकराकृत कुण्डल, अरुण तिलक दये भाल।
अधर सुधारस मुरली राजति उर बैजन्ती माल।।
छुद्र घंटिका कटि तट शोभित नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई भगत बछल[1] गोपाल।।

२

भज मन चरण कँवल अबिनासी।
जेताई दीसे धरण गगन बिच, तेताई सब उठ जासी।।
कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हे, कहा लये करवत कासी।
इण देही का गरब न करणा, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर की बाजी, सांझ पड्यां उठ जासी।।
कहा भयो है भगवा पहर्यां, घर तज भये संन्यासी।
जोगी होय जुगति नहीं जागी, उलट जनम फिर आसी।।

---

१. वत्सल

अरज करूं अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फांसी ।।

३

राम नाम रस पीजै, मनुआं राम नाम रस पीजै ।
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि-चरचा सुन लीजै ।।
काम क्रोध मद लोभ मोह कूं, बहा चित्त से दीजै ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग में भीजै ।।

४

मन रे परसि हरि के चरण ।
सुभग सीतल कँवल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण ।।
जिन चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण ।
जिन चरण ध्रुव अटल कीन्हें, राखि अपनी शरण ।
जिन चरण ब्रह्माण्ड भेटचो, नख सिखाँसिरी धरण ।।
जिन चरण प्रभु परसि लीनो, तरी गोतम घरण ।
जिन चरण कालीनाग नाथ्यो, गोपलीला करण ।।
जिन चरण गोबरधन धार्‌यौ, गर्व मघवा हरण ।
दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण ।।

५

हरि मोरे जीवन प्रान-अधार ।
और आसिरौ नाहीं तुम बिन तीनूं लोक मंझार ।।

आप बिना मोहि कछु न सुहावै निरख्यो सब संसार।
मीरा कहै मैं दासि रावरी,[1] दीज्यो मती बिसार ॥

६

हरि तुम हरो जन की भीर।
द्रोपदी की लाज राखी, तुरत बढ़ायो चीर ॥
भक्त कारण रूप नर हरि, धरयो आप सरीर।
हरिनाकुश मारि लीन्हों धरयो नाहि न धीर ॥
बूड़तो गजराज राख्यो, कियो बाहर नीर।
दासि मीरा लाल गिरधर, चरण कँवल पै सीर ॥

७

पायो जी म्हैं तो राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी म्हांरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो ॥
जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचै ना खूटै, वांको चोर न लूटै, दिन दिन बढ़त सवायो ॥
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख जस गायो ॥

८

नहिं ऐसो जनम बार बार।
का जानूं कछु पुण्य प्रगटे, मानुसा अवतार ॥

---

१. आपकी

बढ़त छिन छिन घटत पल पल, जात न लागे बार।
बिरछ के ज्यों पात टूटे, लगे नहिं पुनि डार॥
भौसागर अति जोर कहिये अनँत ऊँडी धार।
राम नाम का बांध बेड़ा, बेग उतरो पार॥
साधु सन्ता महंत ज्ञानी, चलत करत पुकार।
दासि मीरा लाल गिरधर, जीवना दिन चार॥

९

मेरे तो गिरधर-गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकट मेरो पति सोई॥
तात मात भ्रात बन्धु, आपनो न कोई।
छाँड़ दई कुल की कानि[1] का करिहै कोई॥
सन्तन ढिग बैठि बैठि, लोक-लाज खोई।
अब तो बात फैलि गई, होनी होय सो होई॥
चुनरी के किये टूक, ओढ़ लीन्ही लोई।
मोती मूंगे उतार, बन-माला पोई॥
अँसुवन जल सींच सींचि प्रेमि बेलि बोई।
अब तो बेलि फैलि गई, आनँद फल होई॥
दूध की मथनिया बड़े प्रेम से बिलोई।
माखन जब काढ़ि लियो, छाछ पिये कोई॥

---

१. मर्यादा

भगति देख राजी हुई, जगति देखि रोई।
दासि मीरा गिरधर प्रभु, तारो अब मोंही ॥

१०

करम गति टारै नाहिं टरै।
सतबादी हरिश्चन्द से राजा, नीच घर नीर भरे ॥
पांच पांडु अरु कुन्ती द्रोपदी, हाड़ हिमालै गरे।
जग्य कियो बलि लेण इन्द्रासन, सो पाताल धरे ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बिख से अमृत करें।

११

यहि विधि भक्ति कैसे होय।
हिय तें मन की मैल न छूटी, दियो तिलक सिर धोय ॥
काम कूकर लोभ डोरी, बांधि मोहिं चण्डाल।
क्रोध कसाई रहत घट बिच, कैसे मिले गोपाल ॥
बिलार विषया लालची रे, ताहि भोजन देत।
दीन हीन ह्वै छुधारत से, रामनाम न लेत ॥
आपहि आप पुजाय के रे, फूले अंग न समात।
अभिमान टीला किये बहु कहु, जल कहाँ ठहरात ॥
जो तेरे हिय अन्तर की जानै तासों कपट न बनै।
हिरदै हरि को नाम न आवै, मुख तें मनिया गनै ॥
हरी हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग।
दासि मीरा लाल गिरधर, सहज कर वैराग ॥

१२

श्याम! म्हाँने चाकर राखोजी, गिरधारीलाल! चाकर राखो जी।

चाकर रहसूं बाग लगासूं, नित उठ दरशन पासूं ॥
वृन्दावन की कुंज-गलिन में, गोविंद का गुण गासूं।
चाकरी में दरशन पाऊँ, सुमरिन पाऊँ खरची ॥
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तीनों बाताँ सरसी।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, गल बैजन्ती माला ॥
वृन्दावन में धेनु चरावै, मोहन मुरलीवाला।
ऊँचे ऊँचे महल बनाऊँ, बिच बिच राखूं बारी ॥
साँवरिया के दरसन पाऊँ, पहिर कुसुम्भी सारी।
जोगी आया जोग करण कूं, तप करने संन्यासी ॥
हरि भजन को साधु आये, वृन्दावन के बासी।
मीरा के प्रभु गहिर गम्भीरा, हृदै रहोजी धीरा ॥
आधी रात प्रभु दरसन दैहैं, प्रेम नदी के तीरा।

१३

माई मैं तो गोविन्द लीनो मोल।

कोई कहै छाने कोई कहै चौड़े, लियोरी बजन्ता ढोल ॥
कोई कहै मुंहघों, कोई कहै सुंहघो लियोरी तराजू तोल।
को कहै कारो कोई कहै गोरो, लियोरी अमोलिक मोल ॥

याही कूं सब लोग जाणत हैं, लियोरी आँखी खोल ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आवत प्रेम के मोल ।।

१४

मोहि लागी लगन हरि चरनन की ।
चरन बिना मोहे कछु नहीं भावै, झूठी माया सब सपनन की।।
भौसागर सब सूख गयो है, फिकर नहीं मोहे तरनन की ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, उलट भई मोरे नैनन की ।।

१५

मेरो मन रामहिं राम रटै रे ।
रामनाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे ।।
जनम जनम के खत जु पुराने, नामहि लेत फटै रे ।
कनक कटोरे अमृत भरियो, पीवत कौन नटै रे ।।
मीरा कहे प्रभु हरि अबिनाशी, तन मन ताहि पटै रे ।

१६

रमैया मैं तो थारे रंग राती ।
औरों के पिया परदेश बसत हैं लिख लिख भेजें पाती ।।
मेरे पिया मेरे हृदय बसत हैं, गूंज करूँ दिन राती ।
चुवा चोला पहिर सखी री, मैं झुरमुट रमवा जाती ।।
झुरमुट में मोहि मोहन मिलिया, घाल मिली गल बाँथी ।
ओर सखी मद पी पी माती, मैं बिन पीयां ही माती ।।
प्रेमभठी को मैं मद पीयो, छकी फिरूँ दिन राती ।

सुरत निरत को दिवलो संजोयो, मनसा पूरन बाती ॥
अगम घाणि को तेल सिचायो, बाल रही दिन-राती।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि-चरना चित लाती ॥

१७

हे री मैं तो प्रेम दिवाणी, मेरो दरद न जाणे कोइ।
घाइल की गति घाइल जाणे, जो कोई घाइल होइ ॥
जौहरि की गति जौहरी जाने, दूजा न जाणे कोइ।
सूली ऊपर सेज हमारी, किस विधि सोवणा होइ ॥
गगन मंडल पर सेज पिया की, किस विध मिलणा होइ।
दरद की मारी बन बन डोलूं, वैद मिल्यो नहिं कोइ ॥
मीरा की प्रभु पीर मिटै जद, बैद सांवलियो होइ।

१८

सुण लीजो बिनती मोरी, मैं शरण गही प्रभु तोरी।
तुम (तो) पतित अनेक उधारे, भौसागर से तारे ॥
मैं सबका तो नाम न जानूं कोई कोई नाम उचारे।
अंबरीष, सुदामा नामा, तुम पहुंचाये निज धामा ॥
ध्रुव जो पांच वर्ष के बालक, तुम दरश दिये घनश्यामा।
धना भगत का खेत जमाया, कबिरा का बैल चराया ॥
शबरी का झूठा फल खाया, तुम काज किये मन भाया।
सदना और सेना नाई को तुम कीन्हा अपनाई ॥

करमा की खिचड़ी खाई, तुम गणिका पार लगाई।
मीरा प्रभु तुमरे रंग राती, या जानत सब दुनियाई ॥

१९

जोगी मत जा, मत जा, पांव परूं मैं तोरी।
प्रेम भगति को पैंडो ही न्यारो, हम कूं गैल बताजा ॥
अगर चन्दन की चिता रचाऊं, अपणे हाथ जलाजा।
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपने अंग लगाजा ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिलाजा।

२०

प्यारे दरसन दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय।
जलबिन कमल, चन्द्र बिन रजनी, ऐसे तुम देख्यां बिन सजनी ॥
आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन, विरह कलेजो खाय।
दिवस न भूख नींद नहिं रैना, मुखसूं कथत न आवै बैना ॥
कहा कहूं कछु कहत न आवै, मिलकर तपत बुझाय।
क्यूं तरसावो अन्तरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी ॥
मीरा दासी जनम जनम की पड़ी तुम्हारे पांय।

२१

अब मैं शरण तिहारी जी, मोहिं राखो कृपानिधान।
अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान ॥
जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढ़ी विमान।

और अधम तारे बहुतेरे, भाखत सन्त सुजान ।।
कुबजा नीच, भीलनी तारी, जाणै सकल जहान ।
कहं लग कहूं गिणत नहिं आवै, थकि रहे वेद पुरान ।।
मीरा दासी सरण तिहारी, सुनिये दोनों कान ।

२२

तुम सुनो दयाल म्हाँरी अरजी ।
भौसागर में बही जात हूं, काढ़ो तो थांरी मरजी ।।
यो संसार सगो नहिं कोई, सांचा सगा रघुवरजी ।
मात पिता और कुटुम्ब कबीलो, सब मतलब के गरजी ।।
मीरा की प्रभु अरजी सुनलो, चरण लगावो थांरी मरजी ।

२३

राम मिलण को घणो उमावो,[1] नित उठ जोऊँ बाटड़ियाँ[2] ।
दरस बिना मोहिं कछु न सुहावै जक[3] न पड़त है आंखड़ियाँ ।।
तलफत तलफत बहु दिन बीते पड़ी विरह की फांसड़ियाँ ।
अब तो वेगि दया करि साहिब मैं छूं थारी दासड़ियाँ ।।
नैण दुखी दरसण कूं तरसै नाभि न बैठे साँसड़ियाँ ।
रात दिवस हिय आरत मेरे कब हरि राखै पासड़ियाँ ।।
लागी लगन छूटण की नाहीं अब क्यूं कीजै आंटड़ियाँ[4] ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, पूरौ मन की आसड़ियाँ[5] ।।

---

१. उमंग २. बाट, मार्ग ३. चैन ४. लाग-डांट ५. आशा

२४

भज ले रे मन गोपाल गुना।
अधम तरे अविकार भजन सूं, जोई आये हरि सरना ॥
अविश्वास तो साख बताऊं, अजामील गणिका सदना।
जो कृपाल तन मन धन दीन्हों, नैन नासिका मुख रसना॥
जाको रचत मास दस लागै, ताहि न सुमिरो एक छिना।
बालापन सब खेल गंवायो, तरुन भयो जब रूप घना॥
वृद्ध भयो तब आलस उपज्यो, माया मोह भयो मगना।
गज अरु गीधहु तरे भजनसूं, कोउ तरचो नहिं भजन बिना॥
धना भगत पीपामुनि सबरी, मीरा की हू करो गणना।

२५

आली री मेरे नैनन बान पड़ी।
चित्त चढ़ी मेरे माधुरि मूरत, उर बिच आन अड़ी॥
कब की ठाड़ी पंथ निहारूं, अपने भवन खड़ी।
कैसे प्राण प्रिया बिन राखूं जीवन मूलजड़ी॥
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहैं बिगड़ी।

२६

म्हाँरा सतगुर बेगा आज्यो जी, म्हारे सुखरी सीर बुवाज्यो जी।
तुम बीछड़ियाँ दुख पाऊँ जी, मेरा मन माँही मुरझाऊँजी॥

मैं कोइल ज्यूं कुरलाऊँ जी, कुछ बाहिर कहि न जणाऊँजी।
मोहि बाघण विरह सतावैजी, कोई कहिया पार न पावैजी।।
ज्यूं जल त्याग्या मीना जी, तुम दरसन बिन खीना[1] जी।
ज्यूं चकवी रैण न भावै जी, वा ऊगो भाण सुहावैजी।।
ऊ दिन कबै करोलाजी, म्हारे आंगण पाँव धरोलाजी।
अरज करें मीरा दासी जी, गुर पद रज की प्यासीजी।।

२७

बंसीवाला आज्यो म्हारे देश,थाँरी साँवरी सूरतवालो बेस।
आऊँ आऊँ करि गयो सावराँ, करि गयो कौल अनेक।।
गिणताँ गिणताँ घिस गई जी, म्हारी आँगलियाँ की रेख।
मैं बैरागिण आदि की जी, थाँरे मारे कद को सनेह।।
बिन पानी बिन साबुण साँवरा, होय गई धोय सफेद।
जोगण होकर जंगल हेरूँ तेरो नाम न पायो भेस।।
मोर मुकट पीताम्बर सोहै, घूंघरवाला केश।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल्यां मिटेगो क्लेश।।

२८

सखी मेरी नींद नसानी हो।
पिया को पन्थ निहारते, सब रैन विहानी हो।।
सखियन मिल सीख दई, मन एक न मानी हो।
बिन देखे कल ना परे, जिय ऐसी ठानी हो।।

---

१. क्षीण

अंग छीन व्याकुल भई, मुख पिय पिय बानी हो।
अन्तर वेदन विरह की कोई, पीर न जानी हो ॥
ज्यों चातक घन को रटै, मछली जिमि पानी हो।
मीरा व्याकुल विरहिणी, सुध बुध बिसरानी हो ॥

२९

बरजी मैं काहू की नाहिं रहूं।
सुनोरी सखी तुम चेतन होइके मन की बात कहूं ॥
साध संगति करि हरि सुख लीजै जगसूं दूरि रहूं।
तन मन मेरो सब ही जावो भलि मेरो सीस लहूं ॥
मन मेरो लागो सुमरण सेती सबका मैं बोल सहूं।
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी सतगुर सरण गहूं ॥

३०

फागुन के दिन चार, होली खेल मनारे।
बिन करताल पखावज बाजै, अनहद की झनकाररे ॥
बिन सुर राग छतीसों गावे, रोम रोम रणकाररे।
शील संतोष की केशर घोली, प्रेम प्रीति पिचकाररे ॥
उड़त गुलाल लाल भये बादल, बरसत रंग अपाररे।
घट के सब पट खोल दये हैं, लोक लाज सब डाररे ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल बलिहाररे।

३१

मैं गिरधर के घर जाऊं।
गिरधर म्हांरो सांचो प्रीतम देखत रूप लुभाऊं ॥
रैण पडै तब ही उठि जाऊं भोर भये उठ आऊं।
रैन दिना बाके संग खेलूं ज्यूं त्यूं वाहि रिझाऊं ॥
जो पहिरावैं सोई पहिरूं जो दे सोई खाऊं।
मेरी उणकी प्रीति पुराणी उण बिन पल न रहाऊं ॥
जहां बैठावे तितही बैठूं बेचै तो बिक जाऊं।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर बार-बार बलि जाऊं ॥

३२

ऐसी लगन लगाइ कहां तूं जासी।
तुम देखे बिन कल न परत है तलफि तलफि जिव जासी।
तेरे खातिर जोगण हूंगी करवत लूंगी कासी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण-कमल की दासी ॥

३३

कबहुं मिलोगे मोहि आइ रे तूं जोगिया।
तेरे कारण जोग लियो है घरि घरि अलख जगाई ॥
दिवस न भूखि रैण नहिं निंदरा, तुम बिन कछु न सोहाई।
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी मिलि करि तपति बुझाई ॥

३४

तुमरे कारण सब सुख छोड्या अब मोहि क्यूं तरसावौ हो।
विरह-विथा लागी उर अंतर सो तुम आय बुझावौ हो ॥

अब छोड़त नहिं बणै प्रभुजी हँसि करि तुरत बुलावौ हो।
मीरा दासी जनम जनम की अंग से अंग लगावौ हो ।।

३५

राम मिलण के काज सखी, मेरे आरति उर में जागीरी ।
तलफत तलफत कल न परत है, विरह बाण उर लागीरी ।।
निस दिन पंथ निहारूं पीव को पलक न पल भरि लागीरी ।
पीव पीव मैं रटूं रात दिन दूजी सुध-बुध भागीरी ।।
बिरह भुजंग मेरो डस्यो है कलेजो, लहरि हलाहल जागीरी ।
मेरी आरति मेटि गुसांई आइ मिलौ मोहि सागीरी ।।
मीरा व्याकुल अति अकुलाणी पिया की उमंग अति लागीरी।

३६

तेरो कोई नहिं रोकणहार मगन होइ मीरा चली।
लाज सरम कुल की मरजादा सिर सैं दूरि करी ।।
मान अपमान दोऊ धर पटके निकसी हूं ज्ञान गली।
ऊंची अटरिया लाल किवड़िया निरगुण सेज बिछी ।।
पचरंगी झालर शुभ सोहै फलन फूल कली।
बाजूबंद कड़ूला सोहै सिंदूर मांग भरी ।।
सुमरिण थाल हाथ में लीन्हा सोभा अधिक खरी।
सेज सुखमणा मीरा सोहै सुभ है आज घरी ।।

३७

गली तो चारों बंद हुईं, मैं हरि से मिलूं कैसे जाइ ।।
ऊंची नीची राह लपटीली, पांव नहीं ठहराइ ।
सोच सोच पग धरूं जतन से, बार बार डिग जाइ ।।
ऊंचा नीचा महल पिया का, म्हासूं चढ़्यो न जाइ ।
पिया दूर पंथ म्हारो झीणो, सूरत झकोला खाइ ।।
कोस कोस पर पहरा बैठ्या, पैंड पैंड बटमार ।
हे बिधना कैसी रच दीनी दूर बसायो म्हांरो गाँव ।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सतगुर दई बताय ।
जुगन जुगन से बिछुड़ी मीरा, घर में लीनी लाय ।।

३८

बदला रे तू जल भरि ले आयो ।
छोटी छोटी बूंदन बरसन लागी कोयल सबद सुनायो ।।
गाजै बरजै पवन मधुरिया, अंबर बदरां छायो ।
सेझ संवारी पिय घर आये हिल-मिल मंगल गायो ।।
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी भाग भलो जिन पायो ।

३९

कोइ कहियो रे प्रभु आवन की, आवन की मन भावन की ।
आप न आवै, लिख नहीं भेजै बाण पड़ी ललचावन की ।।
ए दोई नैण कह्यो नहिं मानै नदियां बहैं जैसे सावन की ।

कहा करूं कछु बस नहिं मेरो पांख नहीं उड़ जावन की ॥
मीरा कहै प्रभु कब रे मिलोगे चेरी भइ हूं तेरे दांवन की।

४०

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ,
मैं हाजिर नाजिर कद की खड़ी ॥
साजनियाँ दुसमण होय बैठ्या,
सब ने लागूं कड़ी।
तुम बिन साजन कोई नहिं है,
डिगी नाव मेरी समंद अड़ी ॥
दिन नहिं चैन रैन नहिं निदरा,
सूखूं खड़ी खड़ी।
बाण बिरह का लग्या हिये में,
भूलूं न एक घड़ी ॥
पत्थर की तो अहल्या तारी,
बन के बीच पड़ी।
कहा बोझ मीरा में कहिये,
सौ पर एक घड़ी ॥

४१

तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर।
हम चितवत तुम चितवत नाहीं दिल के बड़े कठोर।
मेरी आसा चितवनि तुमरी और न दूजी ठोर ॥

तुम-से हम कूं एक हो जी हमसी लाख करोर।
ऊभी ठाढ़ी अरज करत हूँ अरज करत भयो भोर ।।
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी देस्युं प्राण अकोर।

४२

घड़ी एक नहिं आवड़े, तुम दरसण बिन मोय।
तुम हो मेरे प्राण जी, कासूं जीवण होय ।।
धान न भावै नींद न आवै, विरह सतावै मोहि।
घायल सी घूमत फिरूं रे, मेरो दरद न जाणै कोय ।।
दिवस तो खाय गमाइयो रे, रैण गमाई सोइ।
प्राण गमायो झूरताँ[1] रे, नैण गमाया रोय ।।
जो मैं ऐसी जाणती रे, प्रीत कियाँ दुख होइ।
नगर ढिंढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोइ ।।
पंथ निहारूं डगर बुहारूं, ऊभी[2] मारग जोइ।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होइ ।।

[1] शोकावेग [2] ऊब गई

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तन्दुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज़्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. काबेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मन्दिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामकृष्ण परमहंस
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामेश्वरम्
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिलजुल कर काम करो
५७. कालापानी

मूल्य प्रत्येक का छः आना

५५

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना